Daily Gospel Reflections in Hindi

14 August 2019

मारकूस 1: 16 - 20

"मैं तुम्हे मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा"... शायद जब प्रभु ने इन शब्दों के द्वारा पेत्रुस और आन्द्रेयस को अपना शिष्य बन ने बुलाया तब उन्होने इस बात को गंभीरता से नहीं लिया होगा लेकिन बाद में पेत्रुस ने वास्तव में मनुष्यों का मछुवा बन कर दिखाया और एक ही बार में तिबेरियस के समुद्र की घटना के समान (योहन 21) पहले ही प्रवचन में तीन हजार ख्रीस्तीय विश्वासी बनाये (प्रेरित चरित 2)। मछली पकड़ना अपने आप में एक कला हैं पेत्रुस इस कला में शायद महारत प्राप्त थी। जब जाल फेंकी जाती है तब उसमें हर प्रकार की मछली फंसती हैं, ये मछलिया मछुआरे से शिकायत नहीं करती कि हमें क्यों पकडा! क्यों हम आप के साथ रहें या आप का भोजन बनें! क्यों आप हमें अपने अनुसार प्रयोग करते हो आदि। लेकिन जब मनुष्य को प्रभु के काम के लिये लाया जाता है तब वे कई प्रश्न पूछते हैं, उन सब प्रश्नों का संतोषप्रद जवाब प्रभु के अनुयायी के पास होना चाहिए जिस से हम सभी को उचित उत्तर दे सकें।

हम देखते हैं कि पेत्रुस और आन्द्रेयस अपने नाव और जाल वहीं याकूब और योहन अपने पिता को छोडकर तुरंत प्रभु के पीछे हो लेते हैं। संत पौलुस कहते हैं बुलाये जाते समय आप जिस परिस्थिती में थे वैसे ही रहें। प्रथम प्ररितों ने बिना निसंकोच निसंदेह प्रभु का अनुसरण करने का निश्चय किया। हम में से कई लोग अपने मन इस तरह के विचार लाते हैं कि इसाई बन ने से हमें क्या मिला या ख्रीस्तीय होने से हमें क्या भौतिक लाभ हुआ? ऐंसे में प्रथम शिष्यों का निर्णय हमारे लिये प्रेरणादायी हो। तुम सबसे पहले ईश्वर के राज्य और उस की धार्मिकता की खोज करों और सब चीजें तुम्हें यूँ ही दी जायेंगी (मत्ती 6:33)। वास्तव में प्रभु ने हमेंशा प्रेरितों की हम जरुरत को पूरा किया।

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019